

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

अब आगे सुनो....

जनक राज पारीक

श्रुति प्रकाशन

रिमझिम पारीक

प्रकाशक
श्रुति प्रकाशन
30 मंडी ब्लॉक
श्रीकरणपुर 335073
(राजस्थान)
मुद्रक एम० ए० प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा दिल्ली 32
प्रथम संस्करण बसंत, 1984
आवरण नगराज स्वामी
आवरण सज्जा किरण बाफना
मूल्य पच्चीस रुपये

AB AACI SUNO (*Poems by*) Janak Raj Pareek PRICE RS 25/

दर्द के स्वाभिमानी गायक
कन्हैयालाल नन्दन
के लिए

क्रम

उसने पहले तुम्हे
हवा मे उडाया
अधर
फिर तुम्हारे सिर और धड को
अलग-अलग किया
और तुम्हारे विरोध-पत्र को
हस्ताक्षर-अभियान मे बदल दिया।

अब आग सुनो

खरबूजों की नींद

सर्वे ।

सर्वे क्या सर ?
गावा जैसा गाव है
पीपल जैसा पीपल
और छावा जैसी छाव है
बरगद का पड है,
आदमी ?
नही सर
छाया म जा बठ हैं
व आदमी नही
भेड है ।

सामन कुआ है
कुए पर रज्जो।
नहीं सर,
खुदकशी नहीं कर रही है
नौ दिन पूरे हुए
अब पानी भर रही है
हैरानी की क्या बात?
नौ दिन बाद तो
ये दो दो घड़े उठा लेती हैं
साब इन्हें तीन माह का प्रसूति-अवकाश
थोड़े न देती हैं।

इधर जो पिरामिड से—
दिख रहे हैं
तूड़ी के कुप हैं।
उपलों के बटोड़े हैं
बस यूं समझिए
कि गोबर के घोड़े हैं।
लोग इन पर सवारी कहां करते हैं!
उम्र भर बनाते हैं
और अंत में
इन्हीं के नीचे दब मरते हैं।

नहीं सर,
यह कुर्सी दौड़ नहीं है।
गुड़ बन रहा है।
कुछ लोग कुल्हाड़ी खींच रहे हैं
कुछ गन्ने पेल रहे हैं।
उनकी एकाग्रता देखकर ही आपको लगा
जैसे पपलू खेल रहे हैं।
ताश इनके लिए
मेलन की नहीं

खान की चीज है
और अन्न
अन्न इनके लिए पिसान की नहीं
सिफ उपजान की चीज है।
खाने की तमीज इन्ह वहा है, सर।
य मद्द द ता
पत्नी का यौवन,
मा का बुढापा
और बेटो का बचपन खाएग।
चबाएग लगातार
अपन-अपन हिस्मे के अभाव
और उम्र के दिना की कँकर
एक दिन लमनेट हो जाएग
जैम आज नौजवान मगतू हुआ।

बनी हुई बात है सर
—जमीन जमीदार की
काम कामदार का।
लेकिन मगतू यह सच्चाई भूल गया।
जाने क्स उसका सिर फिर गया
कि बाटी के समय आज
जमीदार के पैरा म गिर गया।
मुह खोन वठा
तो उम्र के दिनो की
क हो गई, सर।

व जो भीड म कुछ लोग
रोने बिलखत दिखाई द रहे हैं,
मगतू के परिवार जन है।
जमीदार क आदमिया से
मगतू की लाश न रह है।
लाश लन वाला आदमी
मगतू का भाई है

घूघट म दहाडें मारती औरत
उसकी भौजाई है
जो अभी ताजा-ताजा विधवा हुई है।
सहमा हुआ बच्चा
मगतू का इकलौता बेटा है।

बदला ?
नही सर,
बदला वदला कुछ नही।
गाव म सब चलता है
चूल्हा कभी कभी
आदमी हर रोज जलता है।
आप क्या सोचते है
बदला लेने के लिए
यह बच्चा डाकू बन जाएगा ?
फिल्मो की बात है, सर।
बडा होकर यह कमबख्त भी
जमीदार का चाकू बन जाएगा
और उसके लिए
दातुन छीलेगा
तरकारी काटेगा,
उम्र भर घुडकिया खाएगा।
हीलो हुज्जत की—
तो जिस बाप का बीज है
उसी की मौत मर जाएगा।

रपट ?
रपट कसी सर!
देहाती हुश हैं
सी ए टी कैंट मान ता जानते नही
य भला एफ आई आर लाज करेंगे ?
और करेंगे
तो यकीन कीजिए सर
मगतू की मौत मरेंगे।

हल ?
हल तो दाना है, सर !
अन्न उपजाने के लिए
किसान के पास
काठ का हल है
और फसल उठाने के लिए
जमींदार के पास
चाकू का फल है।

आप इनमें
कहां तक भेजा खपाएंगे
यहां तो समस्या ही समस्या है
सवाल ही सवाल है ।

चाकू खरबूजे पर गिरे
या खरबूजा चाकू पर
नतीजा वही ठन ठन गोपाल है ।
आप इनमें सर खपाएंगे
तो परेशान हो जाएंगे
और आज का भाषण भी
ठीक से नहीं दे पाएंगे ।

इन्हें छोड़िये, सर !
थोड़ा जूस वूस ले लें
सभा का टाइम हो रहा है ।

गांव ?
गांव तो अखबारों में ही जागा था
वर्ना सुख की नींद सो रहा है

बार-बार कविता

अपनी बदसूरती के कारण
आज भी जिन्दा है—
मेरी कविता
जब कि अणचली को
उसकी खूबसूरती खा गई।
इसे सयोग ही समझें
कि पति की मौत पर आसू बहाती
अणचली की खूबसूरत आखें
छोटे ठाकुर को भा गइ
जो आगे चलकर
उसकी मौत का कारण बनी।

अब इस सावजनिक मौत पर
क्या कह मेरी कविता
और क्या कहगे आप ?
जब कि पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट ही
कुछ नही कहती।

कहती है
भयभीत बस्ती की महमी सहमी आखें
कि विवस्त्र पडी अणचली के
केवल हाठ ही लहूलुहान थे
यह कहने का साहस कौन जुटाए
कि उसके गले पर
छोट ठाकुर के अगूठा के निशान थे।
कौन कहे
कि छोटा ठाकुर
उसकी लगातार ना नुकर से
तग हो चुका था
और उसके साथ हुए
आखिरी जग म
मौत स कुछ ही क्षण पूव
अणचली का शील
भग हो चुका था।

अब इस सावजनिक मौत पर
क्या कहे मेरी कविता
और क्या कहगे आप ?
आपके पास कहने को
पनघट है
पायल है
मौसम है
प्यार है,
गोरी गोरी बाह

और अनुआ की मार है।
घुटाए है
संत्रास है
अतृप्त यौन
और लगातार सहवास है।

अणचली की मौत
समाचार पत्रों की
उपशिरा सुर्खी है।
उस पर
बहस कर।

अणचली जैसे लोग
रोज जन्मते हैं,
रोज मरते हैं
और आप जैसे कवि
काफी पीकर
पेशाब की तरह
कविता करते हैं।

कविता और कोलाहल

उस रात भी
इसी तरह
        रोई होगी रात
जब तुमने सूरज पर
पढ़ी थी
        एक कविता
चाद पर
        एक गीत
सितारा पर
        एक रुबाई
और प्यार पर एक बेहयाई।

उस रात भी
तुमस दोनों होगी
तुम्हारी कविता—
आकाश में उतरा
और फुटपाथ लिखा,
बड़े नावू के कागजों पर
अगूठा निशानी की शक्ल में
चिपके
कटे हुए हाथ लिखो।
लिखा।
मेरी सजना के स्वामी !
दो दो पिताओं के रहते
कचरा कुरेदते हुए
अनाथ लिखा।

लेकिन तुम
सिर्फ अपना पेट लिखते रहे
कवि सम्मेलन की सहमतिया
और दिन दिन बढ़ते
अपने रेट लिखते रहे।
पैसे कूटते रहे
मंच लूटते रहे।
ऊंचाइयों पर पहुंचे हुए
सम्मेलन में
रंग जमाते रहे
मुहावरों का वमन कर
कविता को खाते रहे।

शब्दों की काला बाजारी में
उस रात
तुम्हारी कलम की स्याही भी
तुम्हारे खून की तरह

पानी हा चुकी थी,
कोलाहल जि दा था
कविता सदा-सदा के लिए
सो चुकी थी ।

उस रात भी
इसी तरह रोई होगी
रात

जिस तरह
आज
तक
लगातार
रा रही ह
और अपन विवश आसुआ स
कभी खत्म न होने वाली
तुम्हारी
भूख
धो
रही है ।

आओ देखें

चलो चलकर देखें
रधिया के घर चूल्हा जला कि नही ?
एक लबे अरसे से
घनिया को जिसकी चाह थी
वह गरीब रमचना
दूल्हा बना कि नही ?

आओ देखें
शायद नूरद्दीन का लगान
माफ हुआ हो,
धमदास की बही म

मन साठ से दज
रामसरूप का कर्जा साफ हुआ हो।

हो सकता है
नये दरोगा
जिलसिंह के दिल म
गाव की बहू-बटिया के प्रति
थोडी बहुत हया हो
और सभव ह
नफेसिंह का छुटका
नया बस्ता लकर
स्कूल गया हो।

आओ दख
कि कुछ हुआ है
या वही अधे बैल है
और वही बदद जुआ है।

सूर्यहीन

समूचे आसमान को
अपने सूटकेस में भर
वह तहखाने में उतर गया
और हमारे घर बस्ती-संसार को
अंधेरे में तब्दील कर गया।
सूरज
चांद
सितारे
उसकी चार जेब में थे
धुंधलाई आंखों में
और रोशनी जूते की नोक पर।

उसके वैभव पर
मेरा पडोसी स्न झुन हसी हसा—
अवमान मे डूबी हुई
जिसे देखन के लिए
मैंने अपनी मुटिठ्या म
अगारे भर लिये
और जाना
कि फूटते फफोला के पानी म
बडी मारक शक्ति हाती है
जो अगारा को राख
राख का कीचड
कीचड का घर
और बस्ती म बदल देती है।

हसो, उस बस्ती मे चाहे जितना हसो
कोई देख सुन नही पाएगा।
सूरज अपनी शाश्वत सनातन परपरा से
तहखान मे उगेगा
और बदी आसमान मे डूब जाएगा।

अपने आप से जूझते हुए

देखते ही देखत
अंधेरे की पर्तें
उसकी दष्टि मे जम गइ
और उमका सारा ससार
तवे सा
काला हो गया ।

वह नही जानता था
कि वह इतनी जल्दी
क्षतमुखी हो जाएगा
कि उसके अहसास का

सर्पीला आकार
उसी के भीतर
कुण्डली खोलकर
सो जाएगा
कि उसका तीखा तुश
अहम
अभावों की
अंध कदरा मे खो जाएगा
कि अपने आपसे
जूझने का अभ्यासी
वह
नही जानता था
कि इतनी जल्दी
सब इस तरह
हो जाएगा।

क्या तुमने
उसका मरना देखा है ?
क्या तुमने
उसका जीना देखा है ?

काश,
तुम देखते
उसकी आखो मे जलता
प्रगाढ अधकार,
एक क्षत विक्षिप्त
पशु सा दहाडता
पागल आवेश,
एक बबर फुत्कार
और छिपकली की
कटी पूछ-सा
निष्कप होता हुआ
उसका पिशाच आक्रोश।

उफ !
कितना लाचार है
वह शख्स
जो अपने आप से
लड़ता है
अपने आप से
डरता है
एक सज़ ज़िन्दगी
जीता है
और एक धीमी मौत मरता है ।

छत्तीसवीं सालगिरह पर

बडे अनमने एकात म
मनाया है मैन
यह उत्सव
छत्तीस मोमबत्तिया की जगह
छत्तीस साल जलाकर।
इस खुशी म
कि छत्तीस वर्षों का
तिल तिल काटा
पल-पल सहा
फिर भी ढहा नही
धवस्त नही हुआ।

यह मेरी सबसे बडी उपलब्धि है
यही मेरा सबसे बडा कमाल है।
बहरहाल,
मेरे सामने काटने के लिए
वक्त नही,
सैंतीसवा साल है
इसलिए
अपने आप को
तमाम शुभकामनाए सौंपता हुआ
आशीर्वाद देता हू
कि इस पावन पुनीत अवसर पर
सैंतीसवे वर्ष मे प्रवेश कर।
यानि सदा की तरह
चढ जा बेटा सूली पर।

समझौते की पूंगी बजाता है।
तुम्हारी विह्वल समाधि या अनहद-नाद
कोई और सुनता है
और परमानंद में डूब जाता है।

परम योगी,
तुम जागो।
आखिर कब तक रहोगे इस योग निद्रा में
जिसकी वजह से
ठगों के हाथ लग गये हैं
तुम्हारे दण्ड कमण्डल
डाकू उठा ले गये है
तुम्हारी सींगी-सेली
और चोरों ने ओढ़ ली है
तुम्हारी गुदड़ी कथड़ी।
केवल धूनी के अंगारे शेष हैं
जिन्हें
यथास्थिति रही तो
समय के सौदागर
अपनी चिलम भरने के लिए
बुहार लेंगे
और मौका मिला
तो तुम्हारा कोपीन तक उतार लेंगे।

बल्कि खुद उठकर खडा हो गया।
और इस प्रकार
मेरा पूरा कद
उसकी आवश्यकताओ से
बडा हो गया।
उसने मेरे पावो का विश्वास देखा,
निराशा के अधेरे से जूझती
मेरी आखो का उजास देखा
और नि शब्द लौट गया।
तब से अब तक
मन पाया है
कि आकाक्षाओ के आकाश मार्ग को त्याग कर
अब वह
यथार्थ के खुरदरे धरातल पर
चलता है
और निरतर यात्रा के लिए
एक अदम्य उत्साह
उसके पावो म
निरतर फूलता है,
फलता है।

जब वह मुझे मिली
ता मैंन उसस
तुम्हार शिविर तक
पहुचने की प्राथना की।
किरण बोली -
मैं केवल
चलत हुआ के साथ हू,
ठहरे हुआ के लिए मैं
बन्द मुट्ठी वाला
तना हुआ हाथ हू।
तब स तुम्हारे लिए मैं
रोशनी की चकाचौंध म खो गया हू।
तुम्हारा अधकार
मुझे दिखता है
पर तुम्हारे लिए मै
वहुत दूर हा गया हू।

कोई व्यवधान नही थे
और मन म कस्तूरी थी।

हम कब उतरे
गहरी जल धारा मे
बैठ किनारे ऊपर
काजू कुतरे।

नाव, डाड
पतवार, पाल
जैस सामान नही थे
पर तट स कब दूरी थी।

हम तो लुजे पाव लेकर
दर ब दर फिरते
फकीर।
हम समय के साथ
फिर कैसे चलें।

हम अबोल जी लिय
अब तक अंधेरे
झेलकर।

लौट जाना है हम
कठपुतलिया सा
खेलकर।

हम अंधेरा के शिविर मे
जूझती बेबस
किरन हैं
दीप बन घर द्वार का
कैसे जले ?

तुम

तुम
उस समय से डर रहे हो
मैं
जिसकी खोज कर रहा हू ।
वह दिन
दूर नही है
क्योंकि मेरे हाथ
सिर्फ जख्मी है
मजबूर नही है।
परिस्थितियो की चाटुकारिता करते

किसलिए मौन हू ?

उन्हे बता
कि जब मैं फटूगा
तो कैसा विस्फोट होगा
किस प्रकार हर नभचुवी पवत
मेरी मुट्ठी का अखरोट होगा।

उन्हे बता
किस आशा की डोर स
मैंने
अपने होठ सीय है
और किसकी प्रतीक्षा मे
बडी कठिनाइ से
चुप रह रहा हू।
कौन-सा वह क्षण है
जिसके लिए
वक्त के कोडे
अपनी नगी पीठ पर सह रहा हू।

व

जा कल तक अपनी धज म
बारूद क गोन दिखत थ
आज खिलौन कस बन गय ?
वे, जो कल तक अपने पूरे कद के
ऊपर दिखाई दत थ
आज बौन कैस बन गय ?
वे, जिन्हाने अपन गावा की
पगडडिया छाडकर
सुविधाआ क राज माग चुन लिय
उन्हाने सुखी रहन क य सूत्र

उनके लिए और भी भारी पडत है
कभी-कभी बधे हुए हाथ ।
मै जानता हू
तुम मेरे खून स डर रहे हो
और मेरे जख्मी हाथा की कद म
बार-बार मर रहे हो ।

उनके लिए और भी भारी पडते हैं
कभी-कभी बधे हुए हाथ।
मैं जानता हू
तुम मेरे खून से डर रहे हो
और मेरे जख्मी हाथो की कद मे
बार-बार मर रहे हो।

वे

वे
जो कल तक अपनी धज में
बारूद के गोले दिखते थे
आज खिलौने कैसे बन गये ?
वे, जो कल तक अपने पूरे कद के
ऊपर दिखाई देते थे
आज बौने कैसे बन गये ?
वे, जिन्होंने अपने गाँवों की
पगडंडियाँ छोड़कर
सुविधाओं के राजमार्ग चुन लिये
उन्होंने सुखी रहने के ये सूत्र

कैसे सुन लिया
कि जो बीज ऋतु आने पर फूटता है
माली को वाह वाह
मुफ्त में लूटता है।

और वे

उन्हें पहचानो
उन्हें स्वीकार करो
वे बिल्कुल निरापद हैं ।
उन्हें अंगीकार करो ।
समय साक्षी है
वे सदैव उसके साथ रहे हैं ।
हमेशा
युग के अनुरूप वेश में
सजते रहे हैं
और विजयी हाथों की हरकत के साथ
झुनझुने में
बजते रहे हैं ।

बडा ठीक

सीसपाल
अपने साथ
केवल एक पाव लाया था।
फौज से
डिस्चार्ज होकर आया था।
उसका कोई घर नही था
(फिर भी,
बहरहाल)

सीसपाल के घर
रोना धोना चल रहा है।

भाइया की गहृस्थी का
बिगडा हुआ ढाचा
एक हादमे के साथ
सभल रहा है।

अडोस पडोस की औरतें
आत्मीय भाव से
कर रही हैं—
कुछ भी कहो
यह भी कोई जिंदगी थी ?
भाइया के तलवे चाटो,
भाभिया के ताने सुनो।

सीमपाल
गैरत वाला आदमी था
भाइया का भार हल्का कर गया।
बडा ठीक किया
जो सखिया खाकर
मर गया।

इन्तजार और

सुमश वावू
देर तक
उसकी लुज-लुज छातिया से जूझते रहे
पर उरमला को
उमी तरह ठडा और ठस्स पाकर
झुझलाय
और कमला बाइ के पास जाकर चिल्लाय—
क्या बेकार माल भेजा है
अधेल की चीज नही है।
कमबख्त को
हिलन डुलन की तमीज नही है।

उसने बताया है—
उसके एक बच्चा भी है।

उरमला तिलमिलायी—
साहब
वह बच्चा ही है
जो मुझे आप तक ले आया है,
वर्ना पशे का पैसा
शौक से किसने खाया है?

कमला बाई न
उरमला को डाटा
और सुमेश बाबू मे बाली—
बुरा मन मानना, साहब।
बच्ची है
बच्चे मे उलझी रहती है।
बच्चा बीमार है
आजकल म जाएगा
तभी इसका जी जगह पर आएगा।
फुरसत मे थोडा धधा समझ लगी
तो यकीन करना, हुजूर
दा म सौ का काम देगी।

रोशनी

उधर देखो
अंधेरा के उस पार
जहा कुछ प्रकाश किरणें
तुम्ह प्रतीक्षा म
जगमगा रही है।
डरे डरे सकेता से
बुला रही है तुम्ह
बडी विह्वलता के साथ।
उन्ह आवश्यकता है
तुम्हार साहस
और शक्ति की।

वहा पहुचो
अधकार को चीर
ले आओ वहा से
कुछ उजाला
अपने लिए
तथा अपने ही जैस
अन्य लोगा के लिए
जो भटक रहे हैं
अभावा की अध-कदराआ मे।
विश्वास करो—
अपने पावा पर।
तुम्हारी यात्रा
व्यथ नही जाएगी,
रोशनी
तुम्हारी तनी हुई मुटठी के
पीछे-पीछे आएगी।

एक कबीर और

नदी की धारा म
हिचकोले खाता
आया था कल
एक कबीर,
जिसकी प्रथम सूचना दन
नीरू और नीमा
थाने चले गये
और कबीर
एक विशाल मगरमच्छ क
जबड म।

जादूगर

वह आता है
मरा सेठ
मेरा अगूठा लेने।

मर हाथा म
छटपटाने लग है
शत-शत प्रणाम,
रीढ़ की हड्डी
झुकन लगी है
कमान की तरह
माथ पर

कसमसाने लगे हैं
सौ सौ सजदे।

मेरा पूरा अस्तित्व
मेरे लाला की
दुकान होता जा रहा है
जिसमें वह हुमस कर बैठ जाएगा
और मेरी शेष उम्र को
सुपारी की तरह चबाएगा।

मेरे सेठ के माथे पर
वशीकरण तिलक है
और हाथ में
जादुई रोशनाई,
जो मेरे खून से ज्यादा
महँगी और असरदार है।
उसकी कलम
किसी चुड़ैल का दाँत है
और हिसाब ?
कोई माने या न माने
शैतान की आँत है।
जरा गौर करना
जैसे ही मेरा सेठ
मेरे अँगूठे पर स्याही लगाएगा
उसकी पोथी का पन्ना
एक भरा पूरा आदमी लील जाएगा।

श्रतत

रख लो,
तुम रख लो
अपनी हथेलियो पर
वायदो के विषफल
और भाषणो का स्वाद चख लो।
राशनो की राजनीति
तुम्हे
आश्वासनो की
अधी गलियो मे ले जाएगी
और तुम्हारे वतमान का कोलवर
सहज ही
तुम्हारे भविष्य को खा जाएगी।

श्रौर इसलिए

फूला के पास
 अब भी
  शेष है—
  रग,
  रस
  खुशबू ।

कलिया क पास
 अब भी
 कुछ बची खुची महक है
 मुस्कानें ह
 हसी और ठिठोली है

और माली के पास

लाठी है

बारूद है

बन्दूक और गोली है।

और इसलिए

रग

बदरग हो रहे ह,

रस शेप

और मुस्कानें चीत्कारा म

बदल रही है।

अब भी शेप है

एक भय

कि पूरा उपवन

धू धू जलती आग न हो जाय।

वसत का वैभव

होना था जिसे

देखते ही देखते

जलियावाला बाग न हो जाये।

विसर्जित हुआ दुःख

भूख और भय को
एक लय म गाकर
मने पेट से क्षमा मागी,
दद और दुआ को
एक साथ पाकर
मैं एकाएक डर गया
लगा
जसे अदर ही-अदर
कुछ अतिम बार हिला
और मर गया।
फूला

फला
और सूख गया,
अहसास की आधी मे
फिर इस तरह गिर गया
वह सपना का पेड
जसे अकाल मे मरा हुआ साप
या सर्दी मे मरी हुई भेड
शेष बच रही है एक
पथराई आस
बेमाने खुश
और बेमतलब उदास।
यह ठीक ही हुआ
यह सब ठीक ही हुआ
जो सासो का साथ
आज सपना से छूटा
दष्टि का सष्टि से
एक गलत रिश्ता तो टूटा।

आकंठ सागर में

इस पार
या उस पार
कहो
    है किस तरफ अंधियार ?
अंधेरा लीलने को
आ रहा है
    आदमी।

किस जगह उपलब्ध है—
    पीयूष घट।
पी हलाहल उस तरफ
उद्विग्न होकर

जा रहा है
आदमी।

आदमी
अब चाहता है
तोडना सीमा
वयक्तिक लाभ-हानि
स्वाथ की।

आदमी बारुद की
दुगन्ध स
ऊवा हुआ है
देख लो अब आदमी को
स्नह के मोती की खातिर
परस्परता के उदधि मे
कठ
तक
डूबा
हुआ
है।

रचनाधर्मी

और कुछ ठहरो
अभी मैं
व्यस्त हू ।
मुझको अभी
आकार देना है
समय के पत्थरो को ।

मैं नही यह चाहता
ये मूक पत्थर
आदमी के हाथ मे
पथराव के दिन
बेजुबा हथियार हो ।

चाहता हू
आदमी के वास्ते ये
स्नह,
श्रद्धा से भर आकार हा।

और ये प्रस्तर न खेलें
खून की होली,
झुकें सर सामने इनके
वयक्तिक आस्था ले
य सिखायें आदमी को
स्नेह की बोली।

मुझे आकार देने दो।
अभी मैं व्यस्त हू
कुछ और ठहरो
प्रस्तरा को
आस्था की धार देन दो।

ज्योतित घडी मे

धुल गई कालिख
निशा अब जा रही है
फूटने वाली है
अब उजली किरन
            नव प्रात की ।

मत करो बाते
अधेरा की
            अधेरा छट रहा है
बट रहा है
दुख सभी का
एक सा
            सब म बराबर।

है हमे विश्वास—
अपने स्नेह पर,
सहयोग पर।
जा रही है जो
अबोले
सघन तम को साथ लेकर
मत चलाओ बात
इस ज्योतित घडी मे
उस अंधेरी रात की।

बस,
करो विश्वास
अपने छल रहित
और प्रेमपूरित मेल पर।
साध कर डाला है जो
उस परम्परता के
अलौकिक
और अक्षय तेल पर।

रोशनी से रिश्ता

मै अपनी आग को
उजागर करने जा रहा हू ।
अपने अदर छिपी
प्रकाश किरण से
उजाल के रग भरने जा रहा हू ।

मैंने औरा का मुह
ताकना छोडा है ।
मैंने अधकार को काटकर
रोशनी से रिश्ता जोडा है ।
मेरा सघष
बेमानी नही ।

मैंने महसूस किया है—
मैं केवल अपना नही
सभी का हो रहा हू
और अपने अस्तित्व को
परस्परता की उवरा भूमि मे
औरो के लिए बो रहा हू ।

दो ही दिन मे

दो ही दिन म बात
कहा से कहा गई।

मन दुखियारा बन्द हो गया
सबधो की कारा।
चतुर तिमिर के पर पूजता
खडा रहा उजियारा।

रही जोहती पथ
किसी की दो आखे सुरमई।

अधी आखा मे यू व्यापी
सावन की हरियाली।

सकल्पो का रक्त लगा
जैसे अधरो की लाली ।

झरते रह सीचने से ही
क्षाण उम्र के पात ।
कहा से कहा गई—
दो ही दिन म बात ।

कल के लिए

सुविधाओं के
दास बने हम
हरियाली देखने के
अभ्यस्त हैं।

जलते हुए मरुस्थल
हमारी कल्पना को
भारी पड़ते हैं।

कंगूरों पर फहराती
ध्वजाएं
हमारी आंखों में
चकाचौंध भरती हैं

पर दीवारो पर चिपके हुए
मजदूर हाथ
हमारी दष्टि की
सीमा मे नही आते ।

अट्टालिकाओ के उत्सव
हमे सुखदायी सतोष से
भर देत ह
पर अतीत म सिरजे
तसले और करणी के
सगीत को
अनुगूज तक
नही बची है
हमारे काना मे ।

निर्माण महोत्सव के
समस्त दृश्य
धुल-पुछ गए है
हमारे स्मृति पटल से ।

सरलता के पुजारी हम
निष्क्रिय रहकर
नई सुविधाए
कब पदा कर सकेंगे ?
आन वाली
पीढियो को
आनन्द
और अहोभाव से
कैसे भर सकेंगे ?

कस छेड पाएगे
सृजन का वह साज

जिसम नव जीवन का
राग होगा,
और आह्वान की
आवाज होगी
एक ही पथ है केवल
वतमान का अधेरा पीकर
भविष्य को
उजालो से भरना होगा।

कल की अट्टालिकाओ के लिए
हमे आज
कीचड मे उतरना होगा।

आज वसन्त की चेतावनी

उत्सव है
आज कोई उत्सव है।
आज बड़ी चुप्पी है
इस माहौल में।
नटखट हवाएं नजरबंद हैं
शान्त बैठे हैं दार्शनिक गिद्ध,
बड़े अनुशासित ढंग से
जल रहे हैं खेत।
सूखी हुई फसलों में
पके-पके वादे
झरनों के आस-पास
जलते इरादे।

आज बडी निस्तब्धता है
इस तपोवन मे ।
धरती के जग लगे होठो पर
तडप रही है आज
एक सहमी सी तान
बज रहे हैं लगातार
मातमी धुनो पर
—मौन मागलिक गान ।
आज बडा सूनापन है
इस निजन मे ।
अत क्षमा करना ऋतुराज,
दूर से ही क्षमा करना
इस वियावान को
जिसने पीने को प्यास
और खाने को
सूखी घास परोस रखी है ।
सभल कर आना इस व्यवस्था मे,
तुम्हारे स्वागताथ
पलक पावडे बिछाए बैठे है—
झाड झखाड
और अगवानी म
खर्राटे भर रहा है
एक बबर उजाड ।

मैं तुम्हारे पास

वस तो हर बार
तुम मुझे
पराय से लग हो
लेकिन मैं जानता हू
तुम मरे अतरग हो
सगे हो ।

तुम भी ता
हर वक्त
एक दुश्चिन्ता मे
घुलत रहत हो

तुम्हार पास भी
एक व्यथा-कथा है
जिस तुम
अपनी पथरायी आखा से
नि शब्द कहते हो।

और शब्दा का भूखा मैं
लगातार
अपन कथ्य से कट रहा हू
उम्र के अधे इलाका मे
खण्ड खण्ड
शब्दा मे बट रहा हू।

कब
आखिर कब आएगी
वह घडी?
जब मेरी लेखनी
सपना के छद्म को तोड
तुम्हारे दद को
साकार करेगी
और तुम्हारी भीगी पाखो
और रीती आखा स
एक कविता का आविष्कार करगी।

सुख-दुःख बांटो

संग्रह
तुम्हारा स्वभाव बन चुका है।
एकाकी रहकर
हर भाव के भोक्ता
बनना चाहते हो तुम।

सफलता-असफलता का—
अपने एकान्त में झेलना
तुम्हारी आदत बन गई है
जो
तुम्हें तिल-तिल कर

चाट रही है
तुम्हारे अपना स
तुम्हें बहुत धीमे धीमे
चाट रही है।

सुख के सपने
और अभावा की पीडा
अपना म बाटो तो सही
बदले म तुम्ह
आत्मीयता
और अपनाप की
सुखद अनुभूतिया मिलेंगी,
जो तुम्हारी यात्रा का
पाथेय बन जाएगी
और तुम देखोगे
कि मजिलें
स्वय चलकर
तुम्हारे पास आएगी।

जूझेंगे अंधेरों से

यह निशा का
दत्य सा
बबर अंधेरा
रोशनी को लील
हसता जा रहा है।

हर घडी विस्तार ले
गाढा हुआ
तो क्या हुआ ?
रोशनी भी
द्रौपदी के चीर सी है

आदमी के हाथ स
लिखी हुई तकदीर सी है
मिट नही सक्ती
अंधेरा हार जाएगा
अगर
श्रमशील मानव का
पसीने मे नहाया हाथ
जूझेगा
अंधेरा से
अधेर भाग जाएग ।
मनुज के वास्त
सौ-सौ किरण ले
रोशनी की
सक्डा सूरज
गगन म
जाग जाएग ।

फलस्वरूप

कौन जानता था
कि एक दिन आकाश
यू खाली हो जाएगा
और तारे
आधी के बेरो की तरह
झड जाएगे
अधर मे लटकती हुई
हवा
यू टूट टूट कर
गिरेगी

ओजस्वी पहाड
शर्म से गड जाएगे ।

चारा तरफ
एक मातमी धुन बजने लगेगी
लेकिन मर्सिया पढने वाला
कोई न होगा ।

यही होना था
आखिर
यही होना था
इस अवस्था का अंत

तुम—
जो काले अक्षरा को
भैंस समझकर
दुह रहे थे
और मैं
जो तेजी से घटती हुई
दुर्घटनाओ के पीछे
भाग रहा था
किसे मालूम था
कि अकस्मात यू टकरा जाएगे
और खिलखिलाकर
हसने लगेंगे,
शब्दा को
चबा चबाकर खाएगे
गालिया को
चूसेंगे
और एक दूसरे के प्रश्ना का
गलत हल बन जाएगे ।

कौन जानता था
कि तुम्हारा इस्तेमाल
चुनाव चिह्न के रूप म होगा

लेकिन मैं
विरोधी दल का
कुतक बन जाऊगा
और इस तरह
दफ्तरो
मकानो
दूकाना
सस्थाना को
ताला लगाकर
अक्ल घास खाने चली जाएगी
फिर कभी न लौटेगी ।
लेकिन यही होना था शायद
इस व्यवस्था का अत
वर्ना कौन जानता था ।

खाइयो के बीच

बात की शुरुआत
मैं अपने गाव के धरकोट पर खडे
पीपल से करता हू
जो अब भी आराम से खडा
एक निर्बोधता को
गा रहा है।
झर-झरकर
हरा हुआ है,
धरती के सीने पर
आकाश सा छा रहा है।

उससे थोडी ही दूरी पर
दीनू ग्वाला है
जो गाव के जोहड पर
गायें पिलाता,
चूणें चराता
अब भी
एक पवित्र अधेरे म
जी रहा है
प्यार और विश्वास को
एक साथ पी रहा है।

वहा मे कुछ ही दूर
शीशम की छाव मे
पहाडें की पुस्तक रटता
मेरा आरभ है
और उमस सकडा हजारो मील दूर
यह महानगर
जहा गाव से टूटा हुआ
अपने सबधा सस्कारा से छूटा हुआ
मैं हू,
बीच म
एक पिशाच खाई
जिसमे दूर दूर तक
नफरत ही नफरत है,
सदेह
और आतक के साय है।

व्यथ इस भयावह बजर मे
अपनी आस्था को
बो रहा हू
इस पार खडा
उस पार को रो रहा हू
हाय, खाइया ही खाइया
जा हर क्षण मुझे

नीचाइया म ठूस रही है
और मैं
एक पागल तप्ति के लिए
इस दलदल म धस रहा हू
नफाखोरा
और गुरुघण्टाला के साथ
ऊचाइया पर
हस रहा हू ।

कौन खा जाता है,
कौन चर जाता है
मरे पल-पल जगत विद्रोह को ?
कौन सा अहसास है
जो बार-बार मुझे
रिक्तता और मौन स
भर जाता है ?

ये मैं कहा आ गया ?
कहा रह गइ वे ऊचाइया
जिन्ह सपनो की तरह सजोकर
मैं घर से चला था,
कहा रह गया वह आवेश
जो आज तक
मेरे साथ पला था ?

सब कुछ खो गया
शेष एक भय है
लगातार बढती हुई भूख का,
एक सदह है
जा जिदगी और मौत के
सदेशे ढोता
अखबारा की सुखिया मे
गड जाता है
एक दद है

जो शिराओ मे रेंगता हुआ
शिराआ मे ही
सड जाता है
और इन सबके बीच
एक लुटा पिटा आक्रोश
भूखा बीमार वदी लाचार
जो केवल देख रहा है
खाइया के बीच
इस पार   उस पार।

एक नजरबद अहसास

अतिम बार
जब मैंने अपने आपको
देखा
तब मै एक साधारण नस्ल का
आदमी था।
मेरा शरीर
मेरे माहौल मे कैद था
इद गिद की हवाए
मेरे जिस्म से
लिपट रही थी
और मेरे अदर

कुछ चेतना
तब भी मौजूद थी ।

अपने आपको इस तरह देखने पर
मैं लज्जित भी था
और भयभीत भी
लेकिन वह एक जरूरत थी
अपने जिस्म के प्रति लगाव था
श्रद्धा थी
भक्ति थी,
एक कदम के बाद
दूसरा कदम उठाने वाली
थोडी सी
बची खुशी शक्ति थी ।

एक उन्माद
मुझ पर हावी था
एक तेज नशा
मेरी नस-नाडियो पर
छा रहा था
और मैं अपने आपसे
बहुत दूर
जाना चाहता था ।

मैं अपने इरादे पर
बहुत खुश था
मुझे बहुत तसल्ली हो रही थी
दरअस्ल,
उस समय
भूख और भय से पीडित
बहुत सारी उक्तिया
मेरे अदर सो रही थी ।
और मैं उन्हे
जगाना नही चाहता था ।

इससे पहले
कि कुछ विशेष परिवर्तन होता
मैं वहा से चल दिया।
आपने आपको
    बहुत पीछे
    एक गलत जगह पर छोडकर
मैंने भूख और बेबसी का
एक महत्वपूर्ण राग गाया
और उदास हो गया।
हाय,
अपने आपसे
    बहुत दूर जाकर
फिर से
मैं अपने ही पास हो गया।

साहब के सपने

साहब सपने देख रहा है।
साहब सपना दखता है
कि उसके नीचे
काम करने वाले आदमी
आदमी नहीं,
वोट ह
जिनके पीछे
एक निश्चित रग राशि का
नोट है
जो साहब की जेब म जाएगा
और चुनाव का परिणाम
उसकी मर्जी के मुताबिक आएगा।

साहब सपना देखता है
कि पीवसी में लड़के
देवीला के मुह पर
मूछ फूट रही है।
निश्चय ही
उस छफोर की तो केवल
बारात ही जाएगी।
सुहागरात तो
साहब की आएगी।
कामगारों के कपड़ों से
साहब को दुर्गन्ध आती है
पर उनकी औरतों के
उभार देखकर
साहब की लार टपक जाती है।

साहब सपना देखता है—
अब की बार हड़ताल
कुछ लंबी खिंच रही है
और हड़ताल
केवल एक शोर है,
नारा है
जिसके जवाब में
उसके पास ताला है।
एक बार ताला लगवाएगा
तो अच्छे-अच्छों के
ईमान बेच खाएगा।
क्योंकि साहब के पास
कोरे कागज हैं
कागजों पर अंगूठे हैं
और अंगूठों के आगे
सारे कानून झूठे हैं।
फिर कानून तो
केवल कागज का पेट भरता है।
कामगार

अपने बाल बच्चा के
पेट की आग म जलकर
मजबूरी की मौत मरता है।
साहब यह ममझता है।

साहब ने बहुत सपने देखे है,
साकार किये हैं।
साहब सपना की
जुगाली करता है,
लोगा की नीद डकारता है
और आखें
सपना से खाली करता है।
इन दिनो
फत्ते की बिटिया
कदी पर
जैसे जम जवानी आ रही है
साहब की परेशानी
बढती जा रही है।

साहब भूल गया है
कि औरो की तरह
वह भी
आकाश म नहा
जमीन पर है,
उसकी गदन पर भी
अनक नही,
केवल एक सर है।

और सपन जिनक छिन गए
उनकी आखा मे
अब आसू नही
रक्त है।

वक्त है
कि साहब सभल,
जान म

कि लाचार लोग
अब सपनों पर वार करेंगे
और जिंदगी का जहर पीने वाले
यकीनन
स्याही से नहीं मरेंगे ।

रोशनी के रथ पर

बांधो
मेरी कल्पना को बांधने वालो
            बांधो !
मैंने सपना देखा है
कि मैंने
अपनी कल्पना के
            बेलगाम घोड़ा को
समय की जर्जर गाड़ी से
जोड़ दिया है
और तुम्हारे
            स्वार्थ नियोजित गतिरोधकों को

अभावों की संघर्षशील टापों से
तोड़ दिया है।

रोशनी के रथ पर
मैंने किरणों की लगाम को
थाम लिया है।

दहकती रेत
बहकते बगूलों
और अरहरात अंधड़ को
मैंने कविता का नाम दिया है।

उजाले की अग्रदूत
यह कविता
तुम्हारी नींद की
नंगी पीठ पर
लिखी जाएगी।

यह
आदमी के
सांसों को गुनेगी,
धड़कनों को गाएगी।

जड़ें एक

अब आप इस विवाद म न पड़ें
कि पहले मैं पदा हुआ था
या मेरी जड़ें
यह हकीकत आपको हैरान कर देगी
कि मैं बिना जड़ो के जन्मा
बढ़ा
और अब चढ़ने की कोशिश कर रहा हू।
अपनी शिराओ को
शून्य से भर रहा हू।
यह ममतामयी धरती
वैसे तो मेरी भी मा थी

पर मेरे दूधिया दिना मे
किसी और की धाय थी।
मैं अपने पिता
आकाश के सहारे पला।
उसकी किरणें पी
धूप खायी
और उसी की तरह
आग सा जला।
आप मेरी आकाश-वत्ति पर
नजर दौडाएगे
तो मुझे अपना निकट सम्बन्धी पाएग।
मुझे आपकी परस्परता
और आग के सहारे
अपन दिन तपाने है,
रातें जलानी है
और छल बल से बने हुए
धरती के धम-पुत्रा की
जडें हिलानी हैं।

जड़ें दो

पेड़,
जो हमने लगाए थे
अब इस तरह छा गये हैं—
घेर घुमेर
कि हमारे सर पर से
आसमान खा गये हैं।
इनकी अनन्त शाखाएं
हमारी छत तक आते ही
हमारे घर-आंगन को लील जाती हैं
इनकी काली छाया
हमारे हिस्से की

हवा,
चादनी
और धूप को पी जाती है।
इनके जो तने हैं
वे हमारे पसीने,
परिश्रम
और सपनो म बने है।
इनसे हमने
अपना भविष्य वाधा था
लेकिन पेड
अपने फल खुद खान लगे है
इनकी कतर-ब्योंत नही हो सकती
इसलिए पेट
बहुत इतराने लगे है।
पाताल तक पहुची है जो—
इनकी जडें
आओ अब उनके पीछे पडे,
उन्हे काट डालें
और पेडा की हाय-हाय मे वद
हवा, धूप और चादनी को
बाहर निकाले।

अब के बरस

अब
जो हवाओ म बच रही है—
अनुगूज,
वह मेरे गीता की नही
रुदन की है।

पर्वतिया घोरा की
चोटिया पर
सूरज की किरणा के साथ
फफोले फूट रहे हैं।

मरथल के मानुष
            मजे नही
            व्यथाए लूट रहे हैं।

उनके हिस्से की हसी
दिशाए
      पी गई है।

हाय-हाय करत ऊसर को
            इस वार
            वन्न खुद चरेगा
            मवेशी नही चराएगा।
            उसकी नव विवाहिता—
                        छिन्दो
            जानती है
            कि इस वरस
                  सावन नही आएगा।

अब आगे सुनो

तो तुम भी
संधि-पत्र पर हस्ताक्षर कर आए ?
अच्छा किया।
लेखिनी का इससे बढ़िया इस्तेमाल
और हो ही क्या सकता था।
और उस जादूगर का
इससे अधिक विस्मयकारी
हैरत अंगेज कमाल
और हो ही क्या सकता था
कि उसने पहले तुम्हें
हवा में उड़ाया—

अधर,
फिर तुम्हारे सिर और धड को
अलग-अलग किया
और तुम्हारे विरोध-पत्र को
हस्ताक्षर-अभियान मे बदल दिया।

अब एक बात सुनो,
पारिभाषिक शब्दावली मे
तुम अमर हो गये हो
क्योकि तुम मर नही सकते।
तुम्हे जिब्ह किया जाएगा
और तुम्हारे गुर्दे कलेजे
जाघो और पुट्ठा को
तुम्हारा मधि-पत्र खाएगा।

जो स्थान
तुम्हारे लिए आरक्षित है
वहा एक खूटा है।
खूटे की रस्सी को
सिर सौंप देने का अथ
यह कतई नही
कि बकरे की गदन
छुरे-चापड से सुरक्षित है।

बधा हुआ बकरा
जितना ज्यादा चरता है
कसाई की कमाई मे
उसी हिसाब से
बरक्त करता है।

चरा,
औरो के लिए चरो।
सुविधा का चारा
तुम्हे अपनी जरूरत के मुताबिक
जीवित रखेगा

और वक्त आने पर
तुम्हारे अस्तित्व का स्वाद
कोई दूसरा ही चखेगा ।

तुम सोचते हो
कि सघर्ष से छूटकर
तुम अपने भविष्य को
सुरक्षा की तिजोरी मे धर आए हो ।
जबकि हुआ असल मे यह है
कि तुम अपने लिए
पैने दात
और मजबूत जबडे
तय कर आए हो ।

□